

दैनिक जीवन में रसायन

Chemistry in daily life

औषधि / दवाई :->

वे रसायन जो किसी रोग विशेष के उपचार / निदान हेतु काम में लिये जाते हैं औषधि कहलाते हैं।

प्रतिअम्ल (Antacids) :->

वे रसायन जो आमाशय की अम्लीयता को कम करने के लिये काम में लिये जाते हैं। प्रतिअम्ल कहलाते हैं।

अनियन्त्रित खाद्य पदार्थों के सेवन से तथा अधिक चाय, कॉफी, अचार, मुरब्बा अथवा एलीमेंटरी दवाइयों के सेवन से आमाशय की अम्लीयता बढ़ जाती है।

मिल्क ऑफ मैग्नेशियम (मैग्नेशियम हाइड्रॉक्साइड), मैग्नेशियम कार्बोनेट, मैग्नेशियम ट्राई सिलिकेट, एल्युमिनियम हाइड्रॉक्साइड, एल्युमिनियम फॉस्फेट, सोडियम कार्बोनेट (सोडियम हाइड्रोजन कार्बोनेट या सीछा सीडा या बेकिंग पाउडर) आदि को प्रतिअम्ल के रूप में काम में लिया जाता है।

सोडियम बाई कार्बोनेट की अत्यधिक मात्रा आमाशय में क्षारीय प्रकृति उत्पन्न कर देती है। जिससे आमाशय को पुनः उदासीन होने के लिए अम्ल का उत्पादन अधिक करना पड़ता है। ऐसा होने से आमाशय में घाव भी पड़ सकते हैं। इसलिये इसे सामान्यतः प्रतिअम्ल के रूप में काम में नहीं लिया जाता।

वर्तमान में सिमेटिडीन, ऐन्तिटिडीन (बेनडेक), ऑमेप्रेज़ोल, लैंसोप्रेज़ोल आदि को प्रतिअम्ल के रूप में बँचा जाता है।

Ques सामान्यतः घात्विक हाइड्रॉक्साइडों की आमाशय की अम्लीयता को कम करने के लिए काम में लिया जाता है? क्यों?

Ans अधुलनशील होने के कारण यह pH को उदासीन से आगे नहीं बढ़ने देता।

प्रतिहिस्टैमिन / प्रतिएलर्जी (Antihistamine) :->

वे रसायन जो एलर्जी जैसे- त्वचा पर दाने, छुजली, खकते, जलन इत्यादि के उपचार में प्रयुक्त किए जाते हैं, प्रतिहिस्टैमिन कहलाते हैं।

यह श्वसन नलिकाओं और आहारनाल की चिकनी पोशियों को कम करती है। तथा शक्ति बाहिकाओं की दीवारों को नरम करती है।

जैसे :-> ब्रोमोफेनिरामिन (डाइमेटेप), टर्फेनाडीन (सेलडेन)

NOTE :->

प्रतिअम्ल एवं प्रतिएलर्जी / प्रतिहिस्टैमिन औषधि अलग-2 ग्रहियों पर काम करती हैं।

Ex:- प्रतिहिस्टैमिन आमाशय के अम्ल स्रावण पर प्रभाव नहीं डालती हैं।

प्रशान्तक :->

वे रसायन जिन्हें मानसिक रोग के उपचार, निदान हेतु काम में लिया जाता है। प्रशान्तक कहलाते हैं। ये व्यग्रता एवं मानसिक तनाव को कम करने के लिए काम में लिए जाते हैं। साथ ही ये तन्त्रिका तन्त्र पर प्रभाव डालते हैं। एवं इनकी निन्द्राकारी प्रभाव भी होता है।

जैसे :-> क्लोएडाइजेपॉक्साइड, मेप्रोबमेट, इक्वैलिन, बार्बिट्यूरिक अम्ल के व्युत्पन्न जैसे- (बेरोनल ऐसीडल, नेम्बुटल, न्युमिनल, सेकोनल) ।

* वैलियम एवं सेरोटोनिन भी प्रशान्तक के रूप में काम में लिए जाते हैं।

पीडाहारी :->

वे रसायन जो पीडा अथवा दर्द को कम करने के लिए काम में लिए जाते हैं। पीडाहारी या दर्दनिवारक औषधि कहलाती है। ये पीडाहारी के साथ-साथ ज्वररोधी भी होते हैं।

ये दो प्रकार के होते हैं।

निद्राकारी स्वापक (Narcotics) :->

इस प्रकार की पीडाहारी दवाइयों को काम में लेने से असाहनीय पीडा से मुक्ति मिलती है। साथ ही नींद आती है। लेकिन इन दवाइयों / रसायनों का उपयोग करने से इंसान इन दवाइयों के प्रति आदी हो जाते हैं। जैसे :-> मार्फीन, कोकीन, अफीम, यारस, हेरोइन, ब्राउनशूगर etc ।

(ii) अनिद्राकारी अस्वापक (Non-narcotics) :->

इस प्रकार की दवाइयों का सेवन करने से इंसान इन दवाइयों के प्रति आदत नही होता है।

Ex - एस्प्रीन, पैरासीटामोल etc

Ques एस्प्रीन का प्रयोग दिल के दौरों को रोकने में क्यों किया जाता है ?

Ans रक्त का थक्का न बनने देने के कारण

पूतिरोधी एवं रोगाणुनाशी (विसंक्रामी) :-> (2012)

पूतिरोधी	रोगाणुनाशी
1. ये सूक्ष्मजीवों की वृद्धि को रोक देते हैं।	→ ये सूक्ष्म जीवों को नष्ट कर देते हैं।
2. इनका उपयोग जीवित उत्तकों अर्थात् सजीवों पर किया जाता है।	→ इनका उपयोग अजीवित पदार्थों Ex:- फर्श, जाली, यन्त्रों में किया जाता है।
3. इन्हें अल्पमात्रा में प्रयोग किया जाता है।	→ इन्हें अधिक मात्रा में प्रयोग किया जाता है।
4. इनका प्रभाव मंद एवं धीमा होता है।	→ इनका प्रभाव तीव्र होता है।
5. ये दीर्घकाल तक प्रभावी रहते हैं। Ex:- फ्यूरोसिन, सौफ्रामाडिसिन, डेटॉल क्लोरोजाइलिनॉल, आयोडीन	→ ये कुछ (अल्प) समय तक प्रभावी रहते हैं। Ex:- फीनॉल, क्लोरीन, नैफथलीन की गोलियाँ, सल्फर डाई ऑक्साइड

Ques डेटॉल पूतिरोधी में पाये जाने वाले मिश्रण का नाम बताइये ?

Ans क्लोरोजाइलिनॉल एवं टर्पीनिऑल

Ques क्षाबुन में पूतिरोधी गुणधर्म प्रदान करने के लिये क्या मिलाया जाता है ?

Ans बाइथायोनॉल या इस यौगिक के बाइथायानैल ।

Ques आयोडीन का लिंचर क्या है ? एवं इसका उपयोग क्या है ?

Ans आयोडीन का लिंचर एथेनॉल में तैयार आयोडीन का 2-3% तनु विलयन है। एवं इसका उपयोग तेज घाव से एक प्रबल पूतिरोधी के रूप में किया जाता है।

Ques ऑखी के लिए दुर्बल पूतिरोधी के रूप में किसे काम में लिया जाता है?

Ans बौरिक अम्ल (H_3BO_3) का तनु जलीय विलयन

Ques फीनॉल का उपयोग किन-किन प्रतिशताओं में पूतिरोधी एवं रोगाणुनाशी के रूप में किया जाता है?

अथवा

एक ऐसे पदार्थ का उदाहरण दीजिए जो पूतिरोधी एवं रोगाणुनाशी दोनों प्रकार प्रयोग किया जाता है?

Ans फीनॉल का 0.2% विलयन पूतिरोधी होता है। जबकि 1% विलयन रोगाणुनाशी होता है।

Ques क्लोरीन की कितनी सान्द्रता को सामान्यतः रोगाणुनाशी के रूप में काम में लिया जाता है?

Ans क्लोरीन की 0.2-0.4 भाग प्रति दस लाख (PPM, Parts Per million) जल में सान्द्रता को रोगाणुनाशी के रूप में काम में लिया जाता है।

Ques प्रतिजनन क्षमता औषध्य किसे कहते हैं?

Ans वे दसाधन जो जनन की क्षमता को कम या नियन्त्रित करने के काम में ली जाती हैं।

Ques जनन नियन्त्रण गोलियों में जैसे- मालाडी जादि में कौनसे पदार्थ उपास्थित होते हैं?

Ans एस्ट्रोजन एवं प्रोजेस्टेरॉन हार्मोन के व्युत्पन्नी का मिश्रण।

Ques महिलाओं में अण्डोत्सर्ग को नियोजित करने के लिए कौनसा हार्मोन काम में लिया जाता है?

Ans प्रोजेस्टेरॉन

Ques एस्ट्रोजन एवं प्रोजेस्टेरॉन के कौनसे व्युत्पन्न को जनन नियन्त्रण गोलियों में काम में लिया जाता है?

Ans एस्ट्रोजन - इथाइनिलएस्ट्राडाइऑल

प्रोजेस्टेरॉन - नॉरएथिनड्रान

Ques कृत्रिम मधुरक किसे कहते हैं ?

Ans वे कार्बनिक पदार्थ जो स्वाद में मीठे होते हैं। परन्तु शर्करा का मान शून्य होता है। कृत्रिम मधुरक कहलाते हैं।

Ques सैकरीन क्या है। इसकी उपयोगिताए बताइये ?

Ans सैकरीन एक लोकप्रिय कृत्रिम मधुरक है। जिसे ऑर्थो साल्फो बेन्जोमाइड के नाम से भी जाना जाता है। तथा यह सुक्रोज से लगभग 550 गुणा अधिक मीठा होता है।

यह शरीर में अपरिवर्तित रूप में ही मूत्र द्वारा उत्सर्जित कर दिया जाता है। अर्थात् यह हमारे शरीर के लिये हानिकारक नहीं होता है। क्योंकि यह अक्रिय रूप से पुनः बाहर आ जाता है। इसलिये इसे मुधुमेह (डायाबिटीज) रोग से पीड़ित व्यक्ति काम में लेते हैं।

अन्य कृत्रिम मधुरक :->

(1) एस्पार्टेम (सुक्रोज से 100 गुणा अधिक मीठा)

(2) सुक्रालोस (सुक्रोज से 600 गुणा अधिक मीठा)

(3) ऐलिटेम (सुक्रोज से 6000 गुणा अधिक मीठा)।

⇒ ऐलिटेम का उपयोग करते समय मिठास नियन्त्रित करना कठिन है।

⇒ सुक्रालोस :->

यह सुक्रोज का ट्राई क्लोरो व्युत्पन्न है। एवं यह खाना पकाने के तापमान पर स्थायी होता है।

Ques केवल ठण्डे खाद्य पदार्थों एवं पेय पदार्थों तक कौनसा कृत्रिम मधुरक काम में लिया जाता है? एवं क्यों ?

Ans एस्पार्टेम :- क्योंकि यह खाना पकाने के तापमान पर अस्थायी होता है।

Ques खाद्य परिदूषक क्या है ? उदाहरण सहित बताइये ?

Ans ऐसे रसायन जो खाद्य पदार्थ में अल्प मात्रा में मिलाने पर वे जीवाणुओं की वृद्धि को रोक देते हैं। या सूक्ष्म परजीवी से खाद्य पदार्थों को नष्ट होने से बचाते हैं। खाद्य परिदूषक कहलाते हैं। जैसे:- नमक, चीनी, वानस्पतिक तेल, सार्विक अम्ल, प्रोपेनोइक अम्ल etc।

प्रतिजैविक (Antibiotics) :->

वे रासायनिक पदार्थ जो सूक्ष्म जीवाणुओं

जैसे :- बैक्टीरिया, कवक, फंगी द्वारा उत्पन्न होते हैं। और किसी अन्य सूक्ष्म जीवाणु, मनुष्य या अन्य जीवी के शरीर में संक्रामक रोग उत्पन्न कर रहा है कि वृद्धि को रोक देते हैं या नष्ट कर देते हैं। ऐसे पदार्थ प्रतिजैविक कहलाते हैं।

आधुनिक परिभाषा :->

पूर्ण अथवा आंशिक रूप से रासायनिक संश्लेषण द्वारा प्राप्त उन पदार्थों को कहा जाता है। जो कम साम्रता में सूक्ष्म जीवों के उपापचय प्रक्रमों में अवरोध उत्पन्न करके उनकी वृद्धि को रोकते हैं। अथवा उनका विनाश रोकते हैं।

⇒ पॉल एर्लिश ने सिफलिस्ट के ईलाज के लिए कम विषैले पदार्थ तैयार करने के उद्देश्य से औषधि आर्सफेनेमीन बनाई। जिसे सैन्वरसैन के नाम से जाना जाता है।

Ques सबसे अधिक उपयोग में लाये जाने वाली प्रतिजैविक पेनिसिलीन कौनसी है ?

Ans पेनिसिलीन - G

Ques पेनिसिलीन एंटीबायोटिक की खोज किसने की। व किस कवक से की तथा इसका उत्पादन कहाँ होता है ?

Ans एलेक्जेंडर फ्लेमिंग ने सर्वप्रथम 1929 में एक कवक पेनिसिलियम नोटेटम से प्राप्त की। इसका उत्पादन हिन्दुस्तान एंटीबायोटिक द्वारा मिम्परी एवं इण्डियन इगस एण्ड फार्मोसैवेटिकल लिमिटेड महबिकेश में बनाई जाती है।

Ques विस्तृत स्पेक्ट्रम या ब्राड स्पेक्ट्रम प्रतिजीवाणु किसे कहते हैं ?

Ans वे प्रतिजीवाणु जो ग्राम पॉजिटिव एवं ग्राम निगेटिव दोनों प्रकार के जीवाणुओं के विस्तृत परास का विनाश कर सके या विरोध कर सके। अर्थात् अनेक प्रकार के प्रमावी सूक्ष्मजीवों को नष्ट कर सके। वे विस्तृत स्पेक्ट्रम प्रतिजीवाणु कहलाते हैं।

Ex:- क्लोरोफेनिकॉल , टाइफाइड , ऐम्पिसिलीन , ऐमोक्सासिलिन , वेकोगाडासिन , ऑफ्लोक्ससासिन ।

Note :- क्लोरोफेनिकॉल टाइफाइड , पेचिश , तीव्र ब्वर , निमोनिया , कुष्ठ मूत्र संक्रमणो , तानिका - शोथ (मीनिनजाइटिस) इन सब के लिये यह प्रतिजीवाणु काम मे लिया जाता है ।

Ques संकीर्ण स्पेक्ट्रम या नैरोस्पेक्ट्रम किसे कहते हैं ?

Ans जो सामान्यतः ग्राम नगीटिव अथवा ग्राम पॉजिटिव जीवाणुओ के प्रति प्रभावी होते हैं । वो संकीर्ण स्पेक्ट्रम प्रतिजीवाणु कहलाते हैं ।

Ques सीमित स्पेक्ट्रम प्रतिजीवाणु किसे कहते हैं ?

Ans ये किसी (केवल) एक जीव या एक रोग पर प्रभावी होते हैं अर्थात ये किसी निश्चित सूक्ष्मजीव पर ही प्रभावी होते हैं । इसलिए इन्हे सीमित स्पेक्ट्रम प्रतिजीवाणु कहते हैं ।

Ques साबुन एवं अपमार्जक मे अन्तर स्पष्ट करो ?

Ans (i) साबुन दुर्बल अम्ल एवं प्रबल क्षार के लवण हैं । जबकि अपमार्जक प्रबल अम्ल एवं प्रबल क्षार के लवण हैं ।

(ii) साबुन का जलीय विलयन क्षारीय होता है । जबकि अपमार्जक का जलीय विलयन उदासीन होता है ।

(iii) ऊनी एवं रेशमी वस्त्रो अर्थात जिनमे कोमल रेशो होते हैं । उनकी धुनाई साबुन द्वारा नही की जा सकती । जबकि अपमार्जक द्वारा सभी प्रकार के रेशो की धुनाई की जा सकती है ।

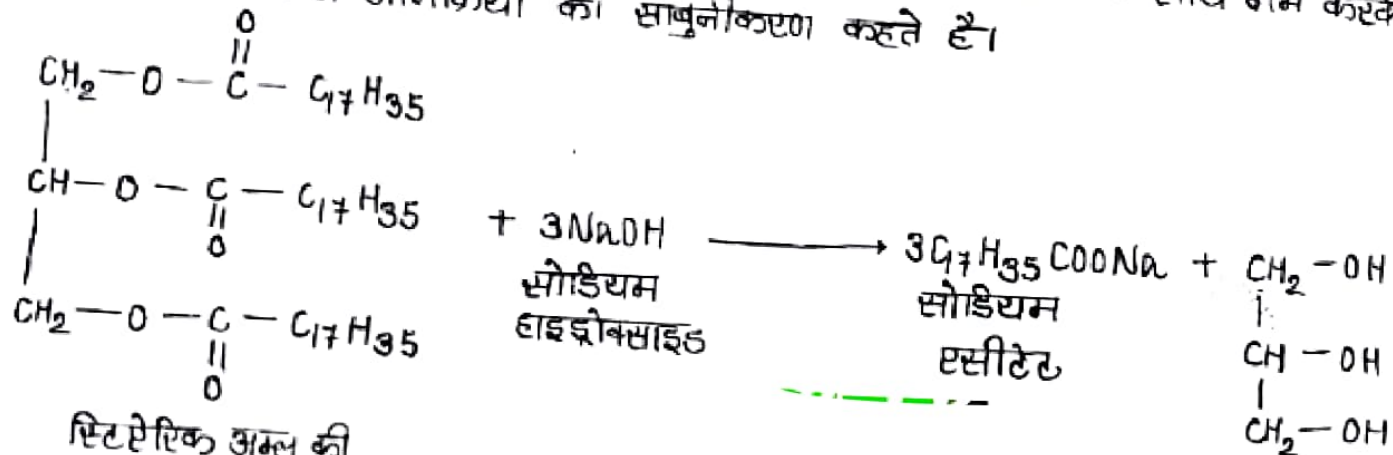
Ques साबुन रहित साबुन किसे कहते हैं ?

Ans अपमार्जक को ।

Ques साबुन क्या है ? बताइये ?

Ans लम्बी शृंखला वाले वक्षीय अम्लो जैसे- पामिटिक अम्ल , ऑलीक अम्ल तथा स्टैरिक अम्लो के सोडियम अथवा पोटेशियम लवण होते हैं ।

ग्लिसरॉल एस्टर) सोडियम हाइड्रोक्साइड के जलीय विलयन के साथ गर्म करके बनाये जाते हैं। इस अभिक्रिया को साबुनीकरण कहते हैं।



स्टिरेरिक अम्ल की
ग्लिसरॉल एस्टर

NOTE :- नाहने की साबुन में NaOH की जगह पोटेशियम हाइड्रोक्साइड (KOH) काम में लिए जाते हैं। क्योंकि इससे बने साबुन कोमल होते हैं।

NOTE :- प्रसादन साबुन उत्तम प्रकार के वसा और तेलों से बनाये जाते हैं।

NOTE :- पानी में तैरने वाले साबुन बनाने के लिए उन्हें कठोर होने से पहले पदार्थ में वायु के छोटे-2 बुलबुले प्रवेश करा दिये जाते हैं।

NOTE :- साबुन के स्पेनॉल में घोलकर या फिर विलायकों के आधिक्य को वाष्पित करके बनाये जाते हैं।

NOTE :- दाढ़ी बनाने के साबुन को जल्दी सूखने से बचाने के लिये इसमें ग्लिसरॉल मिलाया जाता है। साथ ही इन्हें बनाने समय सोडियम नामक गोंध मिलायी जाती है। जिससे सोडियम सोपिनेट बनता है। जो अच्छी तरह झाग देता है।

Ques साबुन कठोर जल में कार्य क्यों नहीं करते हैं?

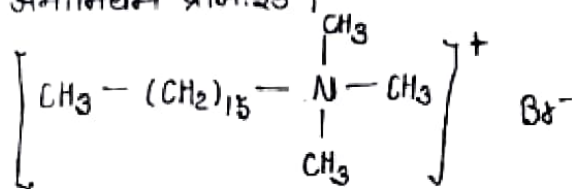
Ans कठोर जल में Ca एवं Mg के कार्बोनेट, सल्फेट व क्लोराइड लवण उपस्थित होते हैं। जब हम साबुन को कठोर जल में मिलाते हैं तो

NOTE :→ तैरायनिक अपमार्जक दन्तमंजन मे भी काम आता है।

घनायनिक अपमार्जक :→

ये मुख्यतः चतुष्क अमोनियम के एसीटेट या क्लोराइड / ब्रोमाइड होते हैं। इनका जलसनेही शिराघनायन होता है। इन्हे प्रतीय साबुन भी कहते हैं। इनके घनायनिक भाग मे लम्बी हाइड्रोकार्बन शृंखला होती है। अतः इन्हे घनायनिक अपमार्जक कहते हैं।

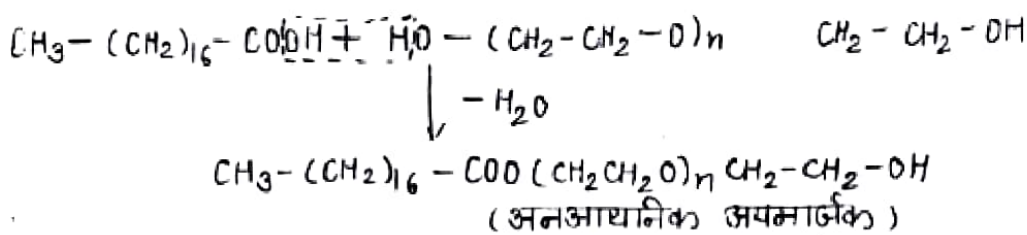
इनमें जीवाणुनाशक गुण पाये जाने के कारण इनका उपयोग अस्पतालो मे किया जाता है। तथा ये महंगे भी होते हैं। जैसे- सैटिल ट्राई मेथिल अमोनियम ब्रोमाइड।



अनआयनिक / नॉनआयनिक अपमार्जक :→

ये मुख्यतः पॉली हाइड्रोक्सि एल्कोहल के एस्टर होते हैं। इनकी संरचना मे कोई आयन नहीं होता। इसलिए इन्हे अनआयनिक अपमार्जक कहते हैं।

इन्हे सामान्यतः स्टिरिक अम्ल एवं पालीएथीलीन ग्लाइकोल की अभिक्रिया द्वारा बनाया जा सकता है।

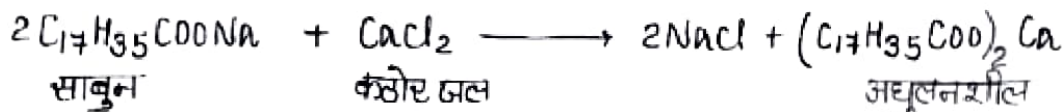


Ques सामान्यतः बर्तन धोने के उपयोग मे कौनसा अपमार्जक काम मे लिया जाता है ?

Ans अनआयनिक अपमार्जक

Ques संश्लेषित अपमार्जको को यदि अधिक शक्ति हाइड्रोकार्बन शृंखला के रूप मे काम मे लिया जाए तो क्या पड़ेगा ?

साबुन में उपस्थित उच्च वसीय अम्लों में घुलनशील सोडियम लवण अपने अनुरूप Ca या Mg लवणों में बदल जाते हैं। और ये लम्बे समय तक जल में अविलेय होते हैं। बिसाँधी अवस्थेय बनाते हैं। इसलिए साबुन का ज्यादािक साबुन बिना कोई क्षारा बनाये खत्म हो जाता है।



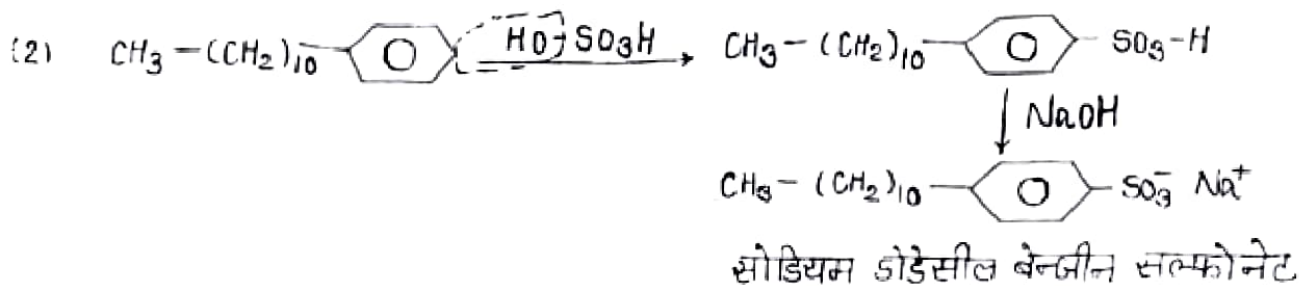
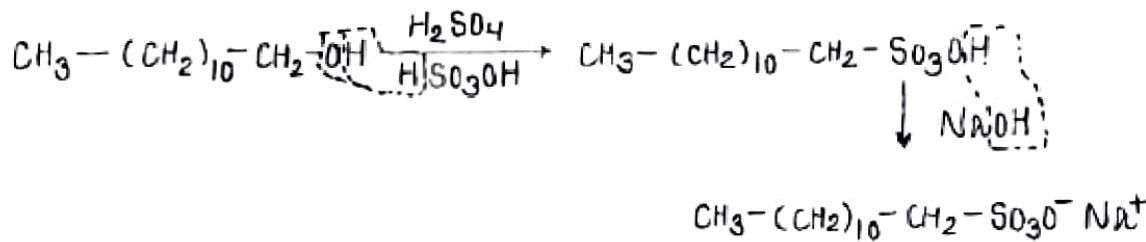
Ques संश्लेषित अपमार्जक किसे कहते हैं ? ये कितने प्रकार के होते हैं।
Ans समझाइए ?

वे संश्लेषित उत्पाद जिनमें साबुन के सभी गुण विद्यमान रहते हैं। यद्यपि वास्तव में ये साबुन नहीं होते एवं इन्हें साबुन रहित साबुन भी कहा जाता है। संश्लेषित अपमार्जकों को तीन भागों में बाँटा गया है।

- (1) तृणायनिक अपमार्जक
- (2) घनायनिक अपमार्जक
- (3) उदासीन अपमार्जक

(1) तृणायनिक अपमार्जक :- ये लम्बी शृंखला वाले प्राथमिक एल्कोहल अथवा हाइड्रोकार्बन के सल्फेट व्युत्पन्न होते हैं। तथा इनके अणु का बड़ा भाग तृणायन होता है। इसलिये इन्हें तृणायनिक अपमार्जक कहते हैं।

Ex: → सोडियम लॉरिल सल्फेट तथा सोडियम पैरा n- डोडेसिल बेन्जीन सल्फोनेट।



Ans संश्लेषित अपमार्जकों की श्रृंखला अधिक शक्ति होने के कारण इनका जीवाणुओं द्वारा आसानी से निम्नीकरण नहीं किया जा सकता जिससे जल प्रदूषण की सम्भावना बढ़ जाती है।

Ques ऐसे कौनसे अपमार्जक हैं। इनकी शोधन क्रियाविधि साबुन की तरह होती है ?

Ans अनआयनिक अपमार्जकों की।

औषध / औषधियों का वर्गीकरण निम्न प्रकार है ?

(1) भेषजगुण विज्ञानिय / फार्मोकोलाजी :->

यह दवाइयों के लिये उपयोगी है। क्योंकि यह जकटों को किसी विशेष उपचार के लिए उपलब्ध पूरी औषधि प्रैणी है।
Ex:- पीड़ाहारियों की पीड़ा खत्म करने के लिए, प्रतिरोधी सूक्ष्म जीवों को नष्ट करने के लिए।

(2) औषध के प्रभाव पर :->

यह किसी जैव रासायनिक प्रक्रम पर आधारित है। जैसे - हिस्टोमिन शैतिक वाले।

(3) रासायनिक संरचना पर आधारित :->

ये एल्कोनेमाइडों द्वारा प्रदर्शित की जाती हैं।

लक्ष्य अणु पर आधारित :->

औषध सामान्यतः जैव अणुओं जैसे कार्बोहाइड्रेट प्रोटीन और न्यूक्लिक अम्ल आदि से अन्योन्य क्रियाएँ करती हैं। जिसे लक्ष्य अणु अथवा औषध लक्ष्य कहते हैं।

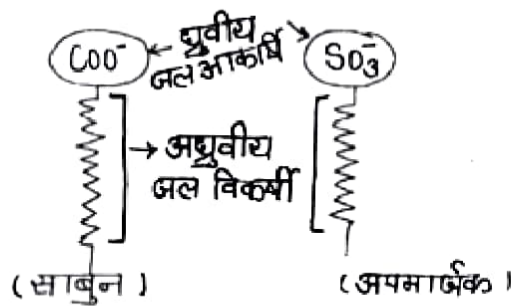
Ques हमें कृत्रिम मधुरकों की आवश्यकता क्यों पड़ती है ?

Ans क्योंकि मधुमेह से पीड़ित रोगियों के आहार में कम कैलोरी की आवश्यकता होती है। तथा मधुरकों में ऊर्जा बहुत कम अर्थात् कैलोरी मान कम पाया जाता है। इसलिए कृत्रिम मधुरकों की आवश्यकता मधुमेह से पीड़ित रोगियों के लिए पड़ी।

Ques एन्जाइम की सतह पर औषधि को चामने के लिए कौनसे बल कार्य करते हैं ?

Ans विभिन्न अन्तराणविक बल जैसे - द्विध्रुव बल वाण्डरवाल बल, हाइड्रोजन बन्ध आदि ।

NOTE : → साबुन एवं अपमार्जक में लम्बी हाइड्रोकार्बन शृंखला के सिरे को अध्रुवीय जल विकर्ष / हाइड्रोफोबिक जबकि स्थानानुक्रमिक सिरे को ध्रुवीय जल आकर्षि या हाइड्रोफिलिक या Tail कहते हैं ।



Ques एस्पिरिन औषधि खाली पेट क्यों नहीं लेनी चाहिए ?

Ans एस्पिरिन अर्थात् एसीटिल सैलिसिलिक अम्ल को जब खाली पेट लिया जाता है तो इसका जल अपघटन होकर सैलिसिलिक अम्ल बनता है जो आँतों में घाव डाल देता है। इसलिए इसे खाली पेट नहीं लिया जाता है।

Ques नॉर एड्रिनिलीन का कम स्तर अवसाध (तनाव) का कारण होता है। इस समस्या के निदान के लिए किस प्रकार की औषधि की आवश्यकता होगी एवं कोई दो औषधि के नाम लिखिए ?

Ans इस प्रकार की समस्या की निदान के लिए प्रसान्तक प्रकार की दवाइयाँ काम में ली जाती हैं। क्योंकि इनका सम्बन्ध तन्त्रिका तन्त्र से होता है। जैसे - इप्रोनिफेन, फेनलमीन

Ques प्रति अम्ल एवं प्रति एलर्जी औषधि हिस्टैमीन के कार्य में बाधा डालती है। परन्तु ये एक - दूसरे के कार्य में बाधक क्यों नहीं होती है ?

Ans क्योंकि ये शरीर के विभिन्न ग्रहियों पर कार्य करती हैं।